# कुरमाली कहानी साहित्य: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

पीएच॰ डी॰ उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप की रूपरेखा

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय

स्नातकोत्तर कुरमाली विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

वर्ष: 2025

शोध निर्देशक

डॉ० उमेश नन्द तिवारी

पूर्व विभागाध्यक्ष

स्नातकोत्तर  नागपुरी विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

बाबुलाल महतो

यु॰ जी॰ सी॰ नेट/जे॰ आर॰ एफ॰

स्नातकोत्तर कुरमाली विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

# कुरमाली कहानी साहित्यः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

भूमिका -

झारखण्ड राज्य खनिज संपदा से भरी हुई है। यहाँ आदिवासी एवं गैर आदिवासी समूदाय के लोग मिल जुलकर निवास करते है। यहाँ के लोग मुख्यतः नौ भाषा का प्रयोग करते है जिन्हें दो भागों में विभाजित किया गया है- (क) जनजातीय भाषायें-संथाली, कुड़ुख, मुंडारी, हो एवं खड़िया (ख) क्षेत्रीय भाषायें-खोरठा, नागपुरी, कुरमाली एवं पंचपरगनिया। इन नौ भाषाओं का अध्ययन एवं अध्यापन का कार्य झारखण्ड के विभिन्न विश्वविद्यालयों में हो रहे है।

कुरमाली झारखण्ड की एक स्वतंत्र एवं समृद्ध भाषाओं में से एक है। यह भाषा झारखण्ड में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कुरमाली भाषा एवं साहित्य का विकास अदिकाल से होती चली आ रही है जो वर्तमान में समृद्ध हो चुकी है। जिससे लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर रही है। कुरमाली भाषा एवं साहित्य को विकसित एवं सुशोभित करने में कुरमाली साहित्यकारों का बहुमूल्य योगदान रहा हैं। साहित्य के विविध विधाओं के अंतर्गत समाहित कहानी, उपन्यास, नाटक, संस्मरण, शब्दचित्र, लघुकथा और पद्य के अन्तर्गत कविता तथा गीत लिखे गए है। कुरमाली लोक साहित्य न सिर्फ कुरमाली क्षेत्र अपितु समस्त क्षेत्र का अक्षय भण्डार है। कुरमाली साहित्य कुरमाली भाषा क्षेत्र के समाज के लिये कार्य करती है।

प्रत्येक भाषा की अपनी-अपनी इतिहास होती है। कोई भी भाषा विकसित एवं समृद्ध नहीं हो जाती है इसके लिए अनेक इतिहासकार के द्वारा क्रमशः सामग्री संकलन, वर्गीकरण, विश्लेषण, संश्लेषण आदि विभिन्न प्रक्रियाओं में से गुजरना पड़ता है। यदि इस दृष्टि से कुरमाली भाषा के इतिहास पर विचार विमर्श किया जाये तो यह ज्ञात होता है कि इस भाषा का भी विकास क्रमशः आदिकाल की सभ्यताओं से हुई होगी क्योंकि यह सिन्धुघाटी की सभ्यता से प्रमाणित हो चुकी है। वह सभ्यता द्रविड़ो की थी जो दुनिया में सर्वाधिक विकसित सभ्यता थी।

इसके विषय में डॉ0 भोलानाथ तिवारी ने ”कुडमालि भाषा बोलने वाले को द्रविड कुडमि कहा है। “तथा उदय नारायण तिवारी ने कहा है कि ”कुड़मि लोगों को अनार्य जाति के द्रविडो के वंशज माना है। “ इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि आर्यो का सिन्धु घाटी के आक्रमण के कारण कुड़मी एवं अन्य जातियाँ पलायन करके पूर्वमध्य भारत (झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा तथा मध्यप्रदेश) के नदियों के किनारे, जंगलों और घाटियों में आकर छिप गये थे, जो आदिवासी के नाम से प्रचलित हुए।

झारखण्ड के भाषाओं में यह विशेषता है कि यहाँ की अधिकांश भाषायें जाति या समुदाय के नाम पर है। जैसे-संथाल जनजाति की भाषा संथाली, मुंडा जनजाति की भाषा मुंडारी, हो जनजाति की भाषा हो, खड़िया जनजाति की भाषा खड़िया है। ठीक इसी प्रकार कुड़मी जाति की भाषा को कुड़मालि कहते है। कुडमि शब्द की उत्पत्ति कुड़ुम से हुआ है जिसका अर्थ -”काछिम या कुछुआ “ है। कुड़मालि संस्कृति में कुल गोत्र-81 है। कोई भी कुड़मी जाति के लोग अपने गोत्र से संबंधित प्रतिक को हानि या क्षति नहीं पहुँचाते और न ही सेवन करते है। बल्कि उनकी पूजा की जाती है।

विभिन्न विद्वानों में कुड़मालि भाषा के नामकरण को लेकर ड़ एवं र ध्वनि में मतभेद है- जैसे- कुड़मालि, कुरमाली आदि। डॉ॰ एच॰एन॰ सिंह, डॉ॰ संतोष कुमार जैन तथा देवकी नंदन प्रसाद आदि विद्वानों ने कुरमाली शब्द का प्रयोग किये है। लखीकान्त मुतरूआर, केशवचन्द्र टिडुवार अनंत केसिआर, डॉ0 वृन्दावन

महतो तथा डॉ0 परमेश्वरी प्रसाद महतो आदि विद्वानों ने ‘कुड़माली’ शब्द का प्रयोग किये है। वस्तुतः विगत वर्षो से इस मतभेद को दूर करने के लिए विचार विमर्श किया जा रहा है।

कुरमाली शिष्ट साहित्य का प्रारंभ मध्यकाल से माना जाता है। परन्तु पूर्ण रूप से 1900 ई0 से शुरूआत हो चुकी थी। सर्वप्रथम ग्रियसेन ने 1903 ई0 में भारत का भाषा सर्वेक्षण ”में कुरमाली भाषा व्याकरणिक विशेषताओं को प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् सन 1903 ई0 में जी0एफ0 हेमिल्टन ने बाइबल के कुछ अंशो का अनुवाद गद्य में किया। स्व॰ निरंजन महतो ने सन् 1921 ई0 में “नेठापाल “ नामक गीत संग्रह का प्रकाश बालासोर उड़ीसा से कटवाया। करम संगीत नामक पुस्तक का प्रकाशन श्री बुधु महतो द्वारा 1970 ई0 में बम्बई से करवाये। इस प्रकार विभिन्न पुस्तकों का प्रकाशन निरंतर होता आ रहा है।

कम समय में कहा जाये और जिसमें हास्य के साथ नैतिक शिक्षा प्राप्त हो उसे कहानी कहा जाता है। इसके अलावे कहानी की अलग अलग विशेषता होती है। कहानी छोटी एवं लम्बी दोनों प्रकार की होती है परन्तु छोटी कहानियों के द्वारा भी बड़ी बातों एवं शिक्षा का उद्बोधन किया जाता है। कुरमाली भाषा साहित्य में आधुनिक समय में जितनी भी कहानियाँ लिखी गई है सभी चरित्र प्रधान है।

कुरमाली गद्य साहित्य के विकास में कहानी का महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रारंभ में विभिन्न कहानियों की रचना की गई थी परन्तु उनका कथावस्तु लोक कथाओं के परिवेश में रचा गया था। सामान्यतः कहा जाता है कि प्रथम कुरमाली कहानी का प्रकाशन 1982 में प्रो0 चन्द्र मोहन महतो द्वारा संपादित ”केहनी जुड़ति “ है। वर्तमान में विभिन्न कहानी तथा कहानियों का संग्रह का प्रकाशन हो चुका है। कहानी के प्रमुख अंग (1) शीर्षक (2) आरंभ (3) मुख्यांश (4) पाराकाष्ठा या चरम सीमा और अन्त है। इनके बिना एक अच्छी कहानी नहीं लिखी जा सकती है।

शोध की प्रेरणा -

मैं प्रारंभ से ही कुरमाली परिवेश में रह रहा हूँ तथा इस भाषा का प्रयोग मैं मातृभाषा के रूप में किया हूँ। अलग झारखण्ड राज्य निर्माण के पश्चात् कुरमाली भाषा को भी विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं में वैकल्पिक विषय के रूप में स्थान प्राप्त हुआ है। मुझे स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् प्रतियोगिता परीक्षाओं में शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ। इसी क्रम में कुरमाली भाषा के कहानियों का अध्ययन करने का मौका मिला, जिससे मैं काफी प्रभावित हुआ। तत्पश्चात् स्नातकोत्तर की पढ़ाई के लिए मैं जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग से जुड़ा। पाठयक्रम में कुरमाली साहित्य एवं इनके अन्य विधाओं का अध्ययन किया।

जिससे कुरमाली कहानियों के बारे में अधिक जानने की इच्छा हुई तथा इसी कारण मुझे कुरमाली कहानियों का विश्लेषणात्मक: एक अध्ययन पर शोध करने की प्रेरणा मिली। फलस्वरूप कुरमाली कहानियों का विश्लेषणात्मक: एक अध्ययन को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का इच्छा मुझमें उत्पन्न हुई।

शोध की परिकल्पनाः-

परिकल्पना शब्द परि + कल्पना दो शब्दों से मिलकर बना है। परि का अर्थ है पूर्व और तथा कल्पना का अर्थ विचार है। अर्थात परिकल्पना से तात्पर्य किसी विषय से संबंधित समस्त संभावित समाधान पर शोध कार्य के पूर्व विचार करना है।

कुरमाली साहित्य में विभिन्न विधाओं में अनेक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी है। कुरमाली साहित्य के विभिन्न विधाओं पर शोध कार्य सम्पन्न हो चुके है तथा कुछ में जारी है। इसी क्रम में प्रस्तावित शोध क्रम पर शोध कार्य कुरमाली कहानियों का विश्लेषणात्मक: एक अध्ययन मन में एम०ए० के पाठयक्रम के दौरान से चली आ रहीं थी। वर्तमान समय में मैं इस शोध विषय पर शोध कार्य प्रारंभ करना चाहता हूँ। जिससे कुरमाली भाषा साहित्य में अभिरूचि के साथ-साथ ज्ञान की क्षमता एवं योग्यता का विकास होगा।

शोध का उद्देश्य -

किसी शोध कार्य का प्रारंभ करने से पूर्व शोध से संबंधित उद्देश्य निर्धारित की जाती है। इस शोध प्रारूप का निम्नांकित उद्देश्य है -

- कुरमाली भाषा एवं साहित्य का गहन अध्ययन करना।
- कुरमाली के कहानियों का अध्ययन करना।
- कुरमाली कहानियों के सामाजिक भावनाओं को जानना।
- कुरमाली कहानी एवं समाज के बीच के संबंधों का अध्ययन करना।
- कुरमाली कहानी में झारखण्ड राज्य के जीवनशैली का अध्ययन करना।
- कुरमाली के कहानीकारों के कहानियों का गहन अध्ययन करना।

शोध का महत्व -

- निज भाषा प्रेम एवं अपनी संस्कृति के प्रति लोगों का रूझान बढ़ेगा तथा उनमें नई जागृति उत्पन्न होगा।
- इस शोध प्रबंध के प्रकाशित होने से कुरमाली कहानियों का सम्मान बढ़ेगा।
- इस शोध के माध्यम से कुरमाली कहानियों में समाज का महत्व बतलाया जाएगा।
- इस शोध माध्यम से कुरमाली कहानियों में झारखण्ड राज्य के समाजिक जीवन का वर्णन किया जाएगा।

शोध विधि-

प्रस्तावित शोध प्रबंध को पूर्ण करने हेतु निम्नांकित शोध विधियों का अनुसरण किया जाएगा-

1. साक्षात्कार विधि
2. अवलोकन विधि
3. व्यैक्तिक अध्ययन विधि
4. विश्लेषणात्मक विधि
5. प्रश्नावली विधि

शोध उपकरणः-

- कम्प्यूटर
- टेप रिकॉर्डर
- वेबसाईट/इंटरनेट
- चित्र
- कैमरा

साहित्य अवलोकन (पूर्व में किए गए शोध/आलोचना कार्यों का विवरण)-

प्रस्तावित शोध प्रबंध एकदम नया शोध विषय है। अब तक इस पर कोई भी शोध कार्य नहीं किया गया है। परन्तु प्रस्तावित शोध विषय से संबंधित कुरमाली कहानियों की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुके हैं। अब तक प्रकाशित शोध एवं उन पुस्तकों के द्वारा इस शोध विषय को सम्पन्न करने में मुझे आधार ग्रंथ के रूप में सहायता प्राप्त होगी।

शोध का समाज में प्रभाव -

प्रस्तुत शोध के प्रकाशित होने से समाज पर इसका सीधा एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, जो निम्नलिखित है -

1. कुरमाली कहानी साहित्य: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन से लोगों में समाज के प्रति झुकाव बढ़ेगा।

2. कुरमाली के माध्यम से लोगों के समक्ष सामाजिक व्यवस्था को दर्शाया जा सकता है।

3. कहानियों के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था को व्यस्थित रखने के लिए जागरूक होंगे।

4. झारखण्ड राज्य के समाज में उपस्थित विभिन्न प्रकार के समाजिक गुण एवं महत्व को समझ पाएंगे।

5. झारखण्ड के गोद में बसे नदियों, जलप्रपातों, पहाड़ों, वादियों जैसे अन्य प्राकृतिक सौंदर्य की जानकारी उपलब्ध हो सकेगी।

6. यह शोध प्रबंध प्रकाश में आने के पश्चात कुरमाली कहानियों के माध्यम से झारखण्ड के सामाजिक व्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा।

7. कुरमाली कहानियों के माध्यम से लोक समाज के संरक्षण के लिए जागरूक होेंगे।

शोध कार्य का रूपरेखा-

- प्रस्तावना
- शोध की प्रेरणा
- शोध की परिकल्पना
- शोध का उद्देश्य
- शोध का महत्व
- शोध विधि

- शोध उपकरण
- शोध का समाज में प्रभाव

प्रस्तावित अध्यायीकरण

- प्रथम अध्याय: कुरमाली भाषा और साहित्य का परिचय

  (क) कुरमाली भाषा की उत्पत्ति एवं विकास

  (ख) भौगोलिक परिवेश

  (ग) कुरमाली भाषा की लोक साहित्य का संक्षिप्त परिचय

  (घ) कुरमाली शिष्ट साहित्य का संक्षिप्त परिचय

  (ङ) लोककथा एवं शिष्ट कथा में अंतर

- द्वितीय अध्याय: लोककथा साहित्य की सैद्धांतिक पृष्टभूमि

  (क) कुरमाली लोक कहानी साहित्य की परिभाषा एवं स्वरूप

  (ख) लोक कथा के तत्व

  (ग) लोककथा के भेद (वर्गीकरण)

  (घ) लोककथाओं की विशेषताएँ

- तृतीय अध्याय: कुरमाली शिष्ट कहानियों का उद्भव और विकास।

  (क) कुरमाली कहानियों के विकास के विभिन्न स्वरूप

  (ख) कुरमाली कहानियों का आरम्भ और विकास के विभिन्न चरण

  (ग) कुरमाली भाषा की प्रतिनिधि एवं उनकी कहानियाँ और उनके कथाकार

  (घ) कुरमाली कहानियों की मुख्य विशेषताएँ

- चतुर्थ अध्याय: कुरमाली शिष्ट कहानियों का तात्विक विश्लेषणात्मक।

  (क) कथा वस्तु

  (ख) पात्र एवं चरित्र चित्रण

  (ग) सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश-चेतना

  (घ) भाषा शैली

  (ङ) संवाद

(च) कथानक रूढ़ियाँ

- पंचम अध्याय: कुरमाली कहानियों में प्रतिबिम्बित जन-जीवन।

(क) पारिवारिक जीवन

(ख) सामाजिक जीवन

(ग) धार्मिक जीवन

(घ) राजनैतिक जीवन

- षष्ठ अध्याय: कुरमाली के प्रमुख कहानीकार और उनकी कहानियाँ।

(क) आजादी से पहले की कहानी

(ख) आजादी के बाद की कहानी

- सप्तम अध्याय: कुरमाली कहानी साहित्य के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान।

(क) राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाएँ

(ख) राजकीय पत्र-पत्रिकाएँ

(ग) स्थानीय पत्र-पत्रिकाएँ

निष्कर्ष

परिशिष्ट -

(क) आधार ग्रंथ

(ख) सहायक ग्रंथ

(ग) पत्र-पत्रिका की सूची

(घ) साक्षात्कार सूची

(ङ) चित्रावली

नोटः- प्रस्तावित शोध प्रारूप में आवश्यकतानुसार आंशिक परिवर्तन किया जा सकता है।

# आधार ग्रन्थ की सुची


| क्र0 सं0 | लेखक | पुस्तक | प्रकाशक | वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| 1 | महतो डॉ0 चन्द्रमोह | कुरमाली केहनि जुड़ति | पृथ्वी प्रकाशन, दिल्ली | 1982 |
| 2 | महतो डॉ0 परमेश्वरी प्रसाद | हालुक कुडमाली केहनि | पृथ्वी प्रकाशन, दिल्ली | 2018 |
| 3 | महतो डॉ0 मानसिंह | माँछी आँधरा | एजुकेशनल बुक सर्विस नई दिल्ली, | 2022 |
| 4 | महतो निताई चन्द्र | जालनाक उपार | प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन, राँची | 2015 |
| 5 | सिंह डॉ0 एच0एन | एहे डहरे | इंस्टिच्यूट फॉर सोशल डेवलपमेंट एण्ड रिसर्च राँची | 2017 |
| 6 | सिंह डॉ0 एच0एन0 | कुरमाली लोकसाहित्य | झारखण्ड जनजातिय कल्याण शोध संस्थान, राँची | 2012 |
| 7 | महतो सुनिल | सातुल | महतो प्रिंटर्स पुरूलिया | 2010 |

# <u>सहायक ग्रंथ की सुची</u>


| क्र॰ सं॰ | लेखक | पुस्तक | प्रकाशन | वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| 1 | सिंह एच. एन डॉ. | कुरमाली बोली के मुहावरे और लीकोक्तियां | राँची | 1978 |
| 2 | महतो खुदिराम | कुरमाली व्याकरण | राँची | 1981 |
| 3 | श्याम सुंदर माहता | कुरमाली भापा तत्व | पुरुलिया | 1973 |
| 4 | अनंत केसरिआर | कुरमाली भांउअर | बंगाल | 2011 |
| 5 | मेहता बसंत कुमार | कुरमाली चारि | राँची | 1989 |
| 6 | मुतरुआर लखीकान्त | जनजाति परिचिति | बोकारो | 2001 |
| 7 | महतो निताई चंद्र | हालुक कुरमाली भांउअर आर रचना | राँची | 2012 |
| 8 | महतो निताई चंद्र | कुरमाली भाषा शिक्षण एवं साहित्य | पटना | 2011 |
| 9 | महतो निताई चद्र | कुरमाली कवि आर काइब | राँची | 2013 |
| 10 | महतो खुदिराम | कुरमाली साहितेक इतिहास | | |
| 11 | केसरिआर पी. पी. | कुरमाली शब्द कुधि | धनबाद | 2001 |
| 12 | तिवारी राम कुमार | झारखण्ड की रूप रेखा | राँची | 2006 |
| 13 | उपाध्याव बैद्यनाथ | झारखण्ड दर्पण | | 2017 |
| 14 | झारखण्ड सरकार | आदिवासी पत्रिका | राँची | 1948 |

# पत्र-पत्रिकाओं की सूचि

| क्र॰ सं॰ | लेखक | पत्रिका | प्रकाशन | वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| 1 | महतो नित्यानंद | करमतीर्थ | कुंजेश्वरी प्रेस, पुरूलिया | 1980 |
| 2 | महतो किरिटि | बानार | तुलीन | 1986 |
| 3 | महतो सुनिल | सारहूल | पुरूलिया | 1983 |
| 4 | महतो मुरलीधर | फूल परब | बोकारो | 2010 |
| 5 | महतो मनोरंजन | फुरूंग | मिदनापुर | 1986 |
| 6 | साखुआर हिरा लाल | विनोद डहर | बलियपुर | 1999 |
| 7 | महतो शंभुनाथ | जहार करम | बेगुनकोदर | 2008 |
| 8 | मतरूआर लखीकांत | टउआ | चास बोकारो | 1902 |